Topic 30 — संख्यावाचक पञ्चनादि शब्द

ष्णान्ता षट्

ष्णान्ता नाम्ना च संख्या षट् संज्ञा स्यात्। 'पञ्चन्' शब्दो नित्यं बहुवचनान्तः। पञ्च। पञ्च- पञ्चभिः। पञ्चभ्यः २। नुट् -

नोपधायाः।

नान्तस्योपधाया दीर्घो नामि। पञ्चानाम्। पञ्चसु।

अष्टन आ विभक्तौ।

अष्टन आत्वं वा स्याद् हलादौ विभक्तौ।

अष्टन् शब्द के स्थान पर हलादि- विभक्ति परे होने पर 'आ' आदेश होता है। ('अलोऽन्त्यस्य' परिभाषा से आकार का आदेश - अन्त्य वर्ण - नकार के ही स्थान पर होगा। आकारादेश अष्टनो दीर्घात् सूत्र के- दीर्घग्रहण सामर्थ्य से वैकल्पिक माना जाता है। उदाहरण - अष्टन् + भ्यस् के हलादि विभक्ति- परे होने पर अन्त्य नकार को आकार होकर - (अष्ट आ + भ्यस् रूप बनेगा। फिर सवर्णदीर्घ तथा सकार का रुत्व विसर्ग करने पर अष्टाभ्यः रूप सिद्ध होता है। आकाराभाव में अष्टभ्यः रूप बनेगा।

अष्टाभ्य औश्।

कृताकाराद् अष्टनः परयोर्जश्शसोरौश्। अष्टभ्यः। - इति वक्तव्ये कृतात्वनिर्देशो जश्शसोर्विषये आत्वं - ज्ञापयति। अष्टौ। अष्टौ। अष्टाभिः। अष्टाभ्यः। अष्टानाम्। अष्टासु। आत्वाभावे - अष्ट पञ्चवत्

'अष्टा' अर्थात् आ कार अन्तादेश किए हुए 'अष्टन्' शब्द से परे जस् और शस् के स्थान पर 'औश्' आदेश होता है। औश् -

में शकार इत्संज्ञक है, अतः 'अनेकाल् शित्सर्वस्य' परिभाषा से सम्पूर्ण 'जस्' और 'शस्' के स्थान पर होगा। यह सूत्र 'षड्भ्यो लुक्' का अपवाद है।